भारत सरकार

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1727

(दिनांक 10.12.2025 को उत्तर देने के लिए)

दक्षिण कन्नड़ में आकाशवाणी केन्द्र

1727. कैप्टन बृजेश चौटाः

क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) दक्षिण कन्नड़ में कार्यरत आकाशवाणी केन्द्रों विशेषकर तटीय और समुद्री प्रसारण प्रदान करने वाले केंद्रों का, उनके स्थान, मेगावाट/एफएम फ्रीक्वेंसी बैंड, भूमि और अपतटीय कवरेज क्षेत्र तथा मछली पकड़ने से संबंधित मौसम बुलेटिनों के लिए प्रयुक्त क्षेत्रीय भाषाओं सहित, ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार ने समुद्री संचार और मछुआरों की सुरक्षा में सुधार लाने के लिए जिले में रेडियो अवसंरचना का कोई डिजिटल उन्नयन किया है, जैसे पुराने ट्रांसमीटरों को बदलना, विस्तारित तटीय पहुंच के लिए एफएम टावरों को मजबूत करना, डिजिटल रेडियो (डीआरएम) प्रणाली स्थापित करना या वास्तविक समय अलर्ट के लिए स्टूडियो को स्वचालित करना और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार दक्षिण कन्नड़ के तट पर विशेषकर मंगलौर, उल्लाल, सोमेश्वर तथा अन्य लैंडिंग केंद्रों से मछुआरों के लिए रेडियो संपर्क और समुद्री संचार बढ़ाने के उपायों, जिसमें वीएचएफ/एचएफ प्रणाली, 'नाविक' संदेश रिसीवर या चक्रवातों तथा समुद्री सुरक्षा चेतावनियों के लिए आपातकालीन प्रसारण सहायता का प्रावधान शामिल है, पर विचार कर रही है; और

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

सूचना और प्रसारण एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री

(डॉ. एल. मुरूगन)

(क) से (घ): मंगलौर (उडुपी), कारवार और मदिकेरी में आकाशवाणी स्टेशन दक्षिण कन्नड़ के लिए तटीय और समुद्री प्रसारण सेवाएं प्रदान करते हैं।

मंगलौर स्टेशन दो ट्रांसमीटर संचालित करता है, यथा 100.3 मेगाहर्ट्ज पर 10 किलोवाट एफएम ट्रांसमीटर और 1089 किलोहर्ट्ज पर 20 किलोवाट एमडब्ल्यू ट्रांसमीटर। ये भूमि पर 20 से 40 किमी तक और 50 से 80 किमी तक अपतटीय कवरेज रेडियस प्रदान करते हैं।

कारवार और मदिकेरी स्टेशनों में प्रत्येक में एफएम ट्रांसमीटर क्रमशः 102.3 मेगाहर्ट्ज और 103.1 मेगाहर्ट्ज पर काम कर रहे हैं।

ये स्टेशन कन्नड़, कोंकणी, अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। संबंधित विभागों द्वारा जारी मौसम संबंधी एडवाइजरी और मछुआरों के लिए चेतावनी को नियमित रूप से समाचार बुलेटिन में शामिल किया जाता है।

प्रसारण अवसंरचना और नेटवर्क विकास (बीआईएनडी) स्कीम के तहत, सरकार ने दक्षिण कन्नड़ के लिए निम्नलिखित को अनुमोदित किया है:-

- मंगलौर में 10 किलोवाट एफएम ट्रांसमीटर का प्रतिस्थापन, और
- उडुपी में 1 किलोवाट एफएम ट्रांसमीटर की स्थापना, जिसका उद्देश्य कोस्टल रिसेप्शन और प्रसारण विश्वसनीयता में सुधार करना है

मंगलौर, उल्लाल, सोमेश्वर और अन्य लैंडिंग केंद्रों से काम करने वाले मछुआरों की सहायता करने के लिए, सरकार ने निम्नलिखित पहल की हैं:

- कॉमन अलर्टिंग प्रोटोकॉल (सीएपी) आधारित इंटीग्रेटिड अलर्ट सिस्टम (एसएसीएचईटी) रेडियो सहित अनेक मीडिया साधनों के माध्यम से चक्रवात अलर्ट सहित बहुभाषी आपातकालीन चेतावनियां प्रदान करता है

- भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (आईएनसीओआईएस) एफएम/सामुदायिक रेडियो, एनएवीआईसी, मोबाइल ऐप, एसएमएस, सीएपी-एसएसीएचईटी, एनजीओ, वेबसाइटों और सोशल मीडिया के माध्यम से एडवाइजरी प्रसारित करता है
- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने डिस्ट्रस एलर्ट ट्रांसमीटर - सेकंड जेनरेशन (डीएटी-एसजी) को विकसित और तैनात किया है
    - मछुआरे समुद्र से संकट के संकेत भेज सकते हैं और टू-वे मौसम/चक्रवात अलर्ट प्राप्त कर सकते हैं
    - अलर्ट को भारतीय तटरक्षक (आईसीजी) जैसी बचाव एजेंसियों को भेजा जाता है।

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के तहत, सुरक्षा में वृद्धि करने तथा मौसम और सीमा संबंधी चेतावनियों का समय पर प्रसार करने के लिए मछली पकड़ने वाले जहाजों को एनएवीआईसी/डीएटी यूनिट्स, ट्रांसपोंडर और सैटेलाइट-आधारित रिसीवर जैसी संचार और ट्रैकिंग प्रौद्योगिकियां प्रदान की जा रही हैं।

****